श्राद्ध विधि

श्राद्ध विधि

लेखक
ओंकार नाथ शास्त्री
सम्पादक
विजयेश्वर पंचांग

नोट : इस पुस्तक का कैसट् भी आपको मिल सकता है।

मूल्य : 50 रुपये

प्रकाशक

विजयेश्वर पंचांग कार्यालय

अजीत कॉलोनी, गोलगुजराल, जम्मू
स्वरदूत : 555607, 9419133233

E-mail : omvijayshwer@yahoo.com

श्राद्ध

'***श्रद्धया दीयते***' इति श्राद्धः पित्र के निमित जो कुछ भी श्रद्धा से दिया जाता है '**श्राद्ध**' कहलाता है, '**जीवात्मा**' शरीर त्यागने पर '**पित्र**' कहलाता है पितृ ऋण चुकाने के लिये श्राद्ध अवश्य करना चाहिये, श्राद्ध आदि करना हमारा कर्तव्य है। यह श्राद्ध विधि उनके लिये बनाई गई है जो स्वयम श्राद्ध करना चाहते हैं अथवा जिन को ब्रह्माजी ना मिले। यदि आप श्राद्ध करने में असमर्थ हैं तो आप श्राद्ध संकल्प भी कर सकते हैं जो '**विजयेश्वर पञ्चांग**' में दर्ज है।

श्राद्धः- श्राद्ध की जो तिथि हो, पंचांग में उस तिथि के साथ '**दि**' चिन्ह होने से श्राद्ध एक दिन पहले तथा '**प्र**' चिन्ह होने से श्राद्ध अपनी तिथि पर आयेगा। पंचांग में प्रत्येक दिन का श्राद्ध कब है दिखाया गया है।

श्राद्ध करने न करने के सम्बन्ध में:- विवाह, यज्ञोपवीत आदि संस्कार के पश्चात् छः मास तक श्राद्ध न करें, परन्तु यदि माता-पिता का श्राद्ध हो तो अवश्य करना चाहिये।

श्राद्ध कौन कर सकता है:- श्राद्ध पुत्र, पुत्री, भाई-बहिन अथवा कोई परम मित्र भी कर सकता है। श्राद्ध के दिन अधिक भोजन न खायें, दिन को न सोयें,

ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें, किसी नशीली वस्तु का प्रयोग न करें।

नोटः- शास्त्रों में लिखा है।

दवे यज्ञे पितृ श्राद्धे तथा मांगल्य कमर्णे।
तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीव घातनम्।।

अर्थातः- जो गृहस्थी पितृ श्राद्ध, देव यज्ञ अथवा किसी उत्सव पर मांस का प्रयोग करता है वह नरक में जाता है।

श्राद्ध के लिये सामग्रीः-	
कलश - 1	दीप - 1
अखरोट - 25	यज्ञोपवीत - 1
कलश के लिये वस्त्र	बैठने के लिए आसन
देसी घी - 1/2 किलो	रूई - थोड़ी सी (शुद्ध)
शक्कर - 1/2 किलो	शहद - 2 रु०
नीलोफर - 1 पाव	सर्वौषधि - 2 आरी
नारजील - 1 पाव	लाय - 2 रु०
खजूर - 1 पाव	सर्शप - 2 रु०
जव - 1 किलो	ब्रय - 2 रु०
फूल - 1 किलो	कपूर - एक डिब्बा छोटा
काला तिल - 50 ग्राम	हवन सामग्री-1 छोटा डिब्बा
धूप - 1 डिब्बा	लकड़ी - 5 किलो
चूना - 1 पाव	केसर - थोड़ा सा

सिन्दूर - 2 रु०	दर्भ-या द्रमन घास
पवित्र-1 अदद	बेदी बनाने के लिये-
या अगूंठी सोने की	10 ईंटे
अर्घ्य के लिये-	कवली - 6 अदद
धोया हुआ थोड़ा चावल	थाली - 6 अदद
दूध, दही - 1 पाव	चिलमची -
जंग के लिये - चावल	बाल्टी पानी के लिये

कलश पूजा का चित्र

कलश पूजा

सब से पहले पूजामण्डप को सजाये-उत्तर पूर्व कोण जिस को ईशान कोण कहते हैं चूने से ब्रह्म कलश बनायें। धूपदीप जला कर क्षेत्रपाल अपने-अपने स्थान पर रख कर यजमान कलश के सामने पूर्व की ओर मुँह करके बैठे, अपने दायें तरफ के दक्षिण पश्चिम कोण में जिसे नैऋति कोण कहते हैं एक छोटी कवली में तिल विष्टर या दर्भ के दो काण्ड रखें। यज्ञोपवीत धारण करें किसी लड़की से ज़ंग लगवाये और पढें:- **यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यम् अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।** अनामिका ऊँगली में पवित्र डालिये न मिलने पर सोने की अँगूठी भी डाल सकते है। अब यजमान कलश पूजा आरम्भ करे कलश पर फूल चढाते हुये पढे। **ऊँ भद्रं पश्येम प्रचरेम भद्रं, भद्रं वदेम, शृणुयाम भद्रम्। तन्नो मित्रो वरुणो माम्-हन्ताम्-अदितिः सिन्धुः, पृथ्वी उतद्यौः। तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर आततम्। तत् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत् परमं पदम्।**

तीन बार गायत्री मन्त्र पढें:-ॐ गायत्र्यै नमः ॐभूभुर्वः स्वः, तत् सवितु-र्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियोयो नः प्रचोदयात् क्षेत्रपालों को अर्घ डालते हुये पढें। ॐ द्रष्टे नमः, उपद्रष्टे नमः, अनुद्रष्टे नमः, ख्यात्रे नमः, उपख्यात्रे नमः, अनुख्यात्रे नमः, शृण्वते नमः, उपशृण्वते नमः, जाताय नमः, जनिष्यमानाय नमः, भूते नमः, चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमः, मनसे नमः, वाचे नमः, ब्रह्मणे नमः, शान्ताय नमः, तपसे नमः। अब एक कवली में थोड़ा सा पानी, तीन फूल विष्टर या दर्भ के दो काण्ड डाल कर, विष्टर से या दर्भ के दो काण्ड से कलश को जीवादान (छींटे मारते हुये पढें। अग्नेर् आंयुर्-असि तस्य ते मनुष्या आयुष्कृताः, तेन अस्माः अमुष्मा आयुर्-धेहि। इन्द्रस्य प्राणः स ते प्राणं ददातु यस्य प्राणः तस्मै ते स्वाहा। पितृणां प्राणाः तेते प्राणं ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा। मरुतां प्राणाःस्तेते प्राणं ददतु येषां प्राणः तेभ्योवः स्वाहा। विश्वेषां देवानां प्राणः तेते प्राणं ददतु, येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा। प्रजापतेः परमेष्ठिनः प्राणः तौते प्राणं दत्तां, ययोः प्राण ताभ्यां वां स्वाहा पूजा समग्री को छींटे मारते हुये पढें- "आपो हिष्ठा मयो भुवा, तान

ऊर्जेददात न। महे रणाय चक्षसे, यो वः शिव तमो रसः, तस्य भाजयते ह नः। उषतीर् इव मातरः, तस्मै अरंग मम वः यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा स नः कलश पर फूल चढाते हुये पढें "ॐ तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुर आततम् तत् विप्रासो विपन्यवो जाग्रवांसः समिन्धते विष्णो र्यत् परमं पदम्।। यो रुद्रो अग्नौयो अप्सु, य औषधीषु, यो वनस्पतिषु योरुद्रो विश्वा भुवना विवेश, तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु देवाः। गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनां उपम-श्रवस्तमं। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन् ऊतिभिः सीद सादनं नमः।। चित्रं देवानां उदगादनीकं चक्षुमित्रस्य वरुणस्यग्निः।। आप्राद्यावा पृथिवी चान्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुच। जातवेदसे सुनवाम सामं-अराती यतो निदहाति वेदाः, स नः स्पर्शत् अतिदुर्गाणि विश्व नावेव सिन्धुं दुरिता त्यग्निः, कलश याग देवताभ्यः हेरकादिभ्यः नमः।। कवली में मिश्री किशमिश आदि कलश के सामने नेवैद्य के निमित रखिये और पढिये, ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः अब पूजा करने वाला सामने रखी हुई थाली में

थोड़ा सा जल डालते हुये पढे- **अस्य श्री आसन शोधन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः** पृथिवी के ऊपर आसन के रूप में, दो दर्भ काण्ड डालिये फिर पृथिवी माता को तिलक अर्घ पुष्प फूल डालते हुये पढें **प्रीं पृथिव्यै आधार शक्त्यै समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः।** अञ्जलि धारण करते हुये पढें **"पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।** गणेश का ध्यान कराते हुये पढें। **"शुक्लाम्बर धरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये। अभिप्रेतार्थ सिद्धयर्थं, पूजितोयः सुरैर् अपि सर्व विघ्न छिदे तस्मै श्रीगणाधिपतये नमः गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुः साक्षात महेश्वरः। गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः। गुरवे नमः, परम गुरवे नमः, परमेष्ठिने गुरवे नमः, परमाचार्याय नमः, आद्यसिद्धेभ्यो नमः** (अब न्यास करना) **अ नाभौ, उ हृदि, म शिरसि, भूः पादयोः, भुवः हृदि, स्वः शिरसि, भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, भुवः तर्जनीभ्यां नमः, स्वः मध्यमाभ्यां नमः, जनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः, तपः सत्यं करतल कर**

पृष्ठाभ्यां नमः, भूः पादयोः, भुवः जान्वोः, स्वः गुह्ये, भुवः शिरसे स्वाहा, स्वः शिखायै वषट्, महः कवचाय हुँ, जनः नेत्राभ्यां वौषट, तपः सत्यमस्त्राय फट्। चारों और तिल फेंकते हुये पढें। अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया। प्रणायाम् करके शरीर को पानी छिड़कते हुये पढें। "तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मानः, शंस्यो अरुरुषो धूर्तिः पाणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पतेः, पवित्र लगायें वसो पवित्रं असिशत धारं वसूनां पवित्रमसि सहस्त्रधारं अयक्ष्मा वः अपने आप को तिलक अर्घ पुष्प लगाते हुये पढ़े परमात्मने पुरुषोत्तमाय पञ्च भूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधार शक्त्यै समा लभनं, गन्धो नमः, अर्घोनमः पुष्पं नमः दीपक को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुये पढें "स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्-तिमरापहः प्रसीद मम गोविन्द! दीपोयं प्रतिगृह्यताम्। इसी प्रकार धूप को वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः अधारः सर्व देवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्। थाली में सूर्य भगवान् को तिलक अर्घ फूल चढ़ाते हुये पढें नमो धर्म निधानाय नमः

स्वकृतिसाखिणे नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः। पानी की धारा थाली में डालते हुये पढें। **यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुर्भ्रातापि नो यत्र सुहृज्जनश्च। न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय आधार शक्त्यै दीपो नमः धूपो नमः। ऊँ तत् सत् बह्म अद्य तावत् तिथौ, अद्य अमुक मासस्य, अमुक पक्षस्य अमुक तिथौ, अमुक वासरे कलशयाग-देवताभ्यः हेरकादिभ्यः वटुक देवताभ्यः धूपदीप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः, दीपो नमः-** तीन बार गायत्री मन्त्र पढें। **ऊँ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्** दो दर्भ के तिनके आसन के रूप में कलश पर डालते हुये पढें। **कलशयाग देवतानां इदं आसनं नमः।** दो दर्भ के तिनके अर्घसहित हाथ में रखकर आवाहन कीजिये, **कलशयागदेवतानां हेरुकादीनां आवाहयष्यामि ऊँ आवाहय** प्रणयाम करके कवली में लाय केसर सर्वौषधि, दर्भ जल लेकर छींटे मारते हुये पढें **कलशयाग देवताभ्यः हेरुकादिभ्यः, वटुकादिभ्यः पाद्यं नमः।** पाद्य से बचा हुआ जल निर्माल्य में डालकर फिर से कवली में दर्भ, घी, दूध, दही, चावल के दाने जव सर्षप यह आठ वस्तुयें अर्घ्य

कहलाती है विष्ठर से छींटे देते हुये पढें **कलशयाग देवताभ्यः हेरुकादिभ्यः वटुकादिभ्यः इदं वो अर्घ्यं नमः**, तिलक के छीटे देते हुये पढें **कलश यागदेवताभ्यः समाल भनं गन्धो नमः अर्घो नमः, पुष्पं नमः, क्षेत्रपालयो समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।। अन्नहीनं, क्रिया हीनं द्रव्यहीनं, मन्त्रहीनं, यत् गतं तत् सर्वम्-अछिद्रम्- अस्तु सम्पूर्णम्-अस्तु। कलशयाग देवताभ्यः अपोशानं नमः, आचमनीयं नमः, हेरुकादिभ्यः अपोशानं नमः, आचमनीयं नमः।** कलश पर कुछ दक्षिणा जल सहित डालते हुये पढें। **कलशयाग देवताभ्यः दक्षिणाये तिलहिरण्य रजत निष्कर्णे ददानि** और कुछ दक्षिणा डालते हुयें पढें। **एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु क्षेत्रपालयोः दक्षिणायै तिलहिरण्य निष्कर्ण ददानि।** फिर से कलश पर फूल चढाते हुये पढें। **तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिव्यीव चक्षुर-आततम्। तत् विप्रासो विपन्यवो जाग्रवांसः समिन्धते। विष्णो र्यत् परमं पदम्।**

श्राद्ध के लिये अग्नि कुण्ड का चित्र

पूर्व

ईशान

अग्नि कुण्ड

उत्तर

दक्षिण

पिण्ड रखने
का स्थान

बालटी पाने
के लिये

प्रणीत पात्र

वायवी कोण

बैठने का स्थान

नैर्ऋति कोण

पश्चिम
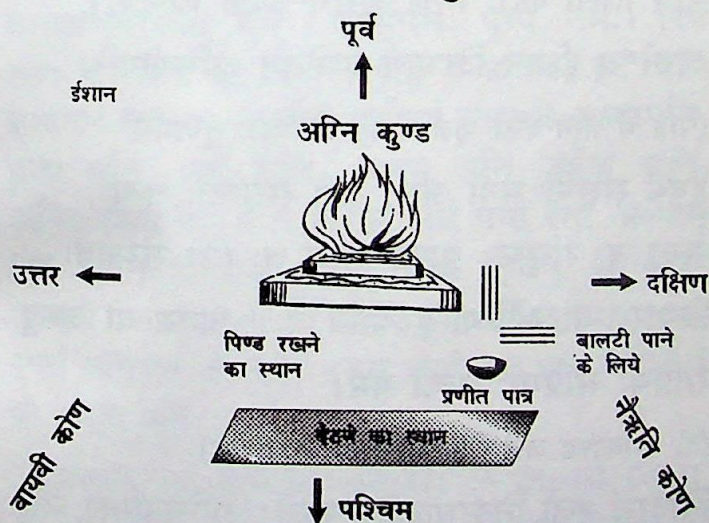
अग्नि कुण्ड पूजा

(अग्नि जला कर कुण्ड के ईशान कोण पर विष्टर, तिल, फूल और पानीवाला प्रणीत पात्र रखें तथा प्रणीत पत्र में तिल डाले तथा अग्नि में भी थोडा सा तिल छोडना)

पात्रं तिला क्षतैः मिश्रं कुसुम्-उदक विष्टरैः।

अग्नेश्च ईशान दिग्भागे प्रणीतम् अभिधीयते।

(पात्र में तीन दफा फूल डालें) **सं व्वः सृजामि**

हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टाः तन्वः,

सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः (2) संय्यावः

प्रियास्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु

संप्रियः संप्रियाः तन्वो मम।

(दो दर्भकाण्ड जलाई हुई दाहें तरफ छोडना)

निर्दिग्धं रक्षो निर्दग्धारातिरपाग्ने। अग्निमामादं जहि

निष्क्रव्यादं सीधा देवयजनं वह। (प्राणायाम करें फिर

प्रणीत पात्र में से अग्नि को नौ छिडकियां देना)

1. ऋतं त्वा सत्येन परिसमूह्यामि 2. सत्यं त्वर्तेन परिसमूह्यामि 3. ऋतसत्याभ्यां त्वा परिसमूह्यामि 4.

ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि 5. सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि 6. ऋत सत्याभ्यां त्वा पर्युक्षामि 7. ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि 8. सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि 9. ऋत सत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि (अग्नि के चार दिशाओं में चार दर्भकाण्ड पूर्व से डालें) यज्ञस्य सन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै स्तृणामि पुरस्तात्, दक्षिणतः, उत्तरतः, पश्चात्, इतिस्तरैः। (अग्नि कुण्ड को तिलक फूल लगाना) अग्नये शुकारूढाय स्वाहासहिताय त्रिनेत्राय तेजोरूपाय समालभनंगन्धो नमः, अर्घोनमः पुष्पं नमः। (दर्भ काण्ड को जला कर जव के पात्र में लगाना) इदं हवि प्रजाननं मे अस्तु दशवीरं सर्वगणं स्वस्तये आत्मसनि, प्रजा सनि, पशु सनि, अभय सनि, लोक सनिं, अग्निः प्रजां बहुलां मे करोतु अन्नं पयो रेतो अस्मासु दत्त घृतेन संलिप्य शृतम् अन्नं शृतम् अभिघार्य (आहुती देना) यहां से एक आदमी घी की आहुति देगा तथा दूसरा अग्निवत्र जो आपने इकट्ठा करके एक पात्र में रखी है की आहुति डालें।

"महाव्याहृतयः प्रभापतेः स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा, ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वाः स्वाहा ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा, ॐ महः स्वाहा। ॐ जनः स्वाहा,

ॐ तपः स्वाहा, ॐ सत्यं स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धी महि धियो यो नः प्रचोदयात् (3) तीन बार पढें। फूल चढायें- अश्वमेधे घोराणामार्षम् आहुति डालते रहें और पढ़ें।

द्रष्ट्रे नम, उपद्रष्ट्रे नमोऽनुद्रष्ट्रे नमः, ख्यात्रे नमः, उपख्यात्रे नमो, नुक्शास्त्रे नमः, शृण्वते नमः, उपशृण्वते नमः, सते नमोऽसेत नमो, जाताय नमो, जनिष्यमाणाय नमो, भूताय नमो, भविष्यते नमः, चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमो, मनसे नमो, वाचे नमो, ब्रह्मणे नमः, शान्ताय नमः तपसे नमः। भूतं भव्यं भविष्यत् वषट् स्वाहा नम, ऋक्साम यर्जुवषट स्वाहा नमो, गायत्री त्रिष्ट उब्जगती वषट् स्वाहा नमः, पृथिवि अन्तरिक्षं द्यौर्वषट् स्वाहा नमः, अन्नं कृषिः वृष्टि र्वषट् स्वाहा नमः। पिता पुत्रः पौत्रो वषट् स्वाहा नमः, प्राणो व्यानोऽपानो वष्ट स्वाहा नमो, भूर्भुवः स्वर्वषट् स्वाहा नमः।

पृश्न्याः पयोसि, तस्य ते क्षीयमाणस्य, पिन्वमानस्य पिन्वमानं निर्वपामि। पञ्चानान्त्वा देवताभ्यो गृहणामीति गृहीत्वा यतीनां भृगूणां स्यूमरश्मेः पृथुरश्मेरिति। पञ्चानान्त्वा वातानां धर्त्राय गृहणामि पञ्चानान्त्वा सलिलानां धर्त्राय गृहणामि। पञ्चानां त्वा पृष्ठानां

धर्त्राय गृहणामि। पञ्चानान्त्वा दिशां धर्त्राय गृहणामि। पञ्चानान्त्वा पञ्चजनानां धर्त्राय गृहणामि। भूरस्माकं हव्यन्देवानां आशिषो यजमानस्य चरोस्त्वा पञ्चबिलस्य धर्त्राय गहणामि, धामांसि, प्रियन्देवामनाधृष्टं देवयजनं देवता भिस्त्वा देवताम्यो गृह्णामि। (आज्यर्दशन करना) आत्मनो वाड्मनः कायोपार्जितपाप निवारणार्थं अग्नये वैश्वानराय इदमाज्यमर्पयामि नमः। (फूल हाथ में ले लें तथा अग्नि में डालें) (ज्वाला मण्डित आकाशं साक्षमाला कमण्डलम् त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रं च होमकाले तु चिन्तयेत्। शुकपृष्ठ गतं देवं शक्ति हस्तं चतुर्भुजम्, मृगाजिनेन सन्नद्धं पुण्पवर्णं हुताशनम्। (आहुति डालें) अग्ना अग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अधिराजः एषः। स नः सुनुः सयुजायुजा च मा देवानां रीषिभ्दागधेयं मोऽस्मभ्यं रीरिषभ्दागधेयं स्वाहा।। प्रजापते न हि त्वदन्य एता विश्वा जातानि परिता बभूव यत्कामास्ते जुहुमः तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा। आयुषः प्राणं सन्तनु स्वाहा। प्राणाद् व्यानं सन्तनु स्वाहा व्यानादपानं सन्तनु स्वाहा। अपानाच्चक्षुः सन्तनु स्वाहा। चक्षुषः श्रोत्रं सन्तनु स्वाहा। श्रोत्राद्वाचं सन्तनु स्वाहा। वाच आत्मानं सन्तनु स्वाहा। आत्मानः पृथिवीं सन्तनु स्वाहा। पृथिव्या अन्तरिक्षं सन्तनु स्वाहा। अन्तरिक्षात्दिवं सन्तनु स्वाहा। दिवः स्वः

सन्तनु स्वाहा (आकूतमिति त्रयोदश) आकूतं च स्वाहा। आकूतिश्च स्वाहा। आधीतं च स्वाहा। आधीतिश्च स्वाहा। विज्ञातं च स्वाहा। विज्ञातिश्च स्वाहा। चितं च स्वाहा। चितिश्च स्वाहा। नाम च स्वाहा। क्रतुश्च स्वाहा। दार्शश्चस्वाहा। पौर्णमासश्च स्वाहा। प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायत् शदुग्रः पृतनाज्येषु। तेर्भिाजं वाजयन्तो जयेम तेनेमा विश्वाः पृतना अभिष्यामस्वाहा। बृहस्पति पुरोहिता देवा देवानां देवा देवाः प्रथमजा देवा देवेषु पराक्रमध्वं स्वाहा। प्रथमा द्वितीयेषु द्वितीयास्तृतीयेषु त्रिरेकादशास्त्र यास्त्रिंशा अनु च आरभे स्वाहा। इदं शकेयं यदिदं करोमि स्वाहा। ते मानव ते मा जिन्वतास्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षेत्रे स्यामा शिष्यस्यां पुराधायामस्यां देव हूत्यां स्वाहा। राष्ट्र भृतामौपनिषदानामृषीणाम्। ऋताषाड् ऋतधामा ग्निर्गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहावट् तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदा नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्। तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। संहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्।

तस्य मरीचयोऽप्सरस आग्रुवो नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्। तस्य दक्षिणा अप्सरस स्तवा नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। प्रजा पतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्। तस्य ऋक्‌ सामान्यप्सरसः एष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्। तस्यापो ऽप्सरस उवर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। स नो भुवनस्य पते यस्य त उपरि गृहा विराट् पते अस्मै ब्रह्मणेऽस्मै क्षत्राय महि शर्म यच्छ स्वाहा। अग्निवृत्राणि जङ्घ नद् द्रविणस्युपिण्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः स्वाहा। त्वं सोमासि सत्पतिस्त्वं राजोत वृत्रहा। त्वं भद्रो असि क्रतुः स्वाहा।

आश्रावितमत्याश्रावितं वषट् कृतम्, अवषट् कृतमऽननूक्तमत्यनूक्तं च। यज्ञेतिरिक्तं कर्मणो यच्च हीनमग्निष्टानि प्रविदन्नेतु कल्पयन् स्वाहा।

वैश्वदेव

पकाये हुये अन्न या घी युक्त रोटियों (चुचवर) पर जलाये हुए दो दर्भ काण्ड लगाते हुये पढ़ें **वैश्वदेवस्य सिद्धस्य सर्वतोऽग्रयस्य अन्नस्य जुहोतिपाकस्य घृतेन संलिप्य यजमानाय स्वस्त्यस्तु शृतमभि-घार्य**- अब थोड़ा-थोड़ा अन्न आहुति अग्नि के उत्तर भाग में दूसरी आहुति दक्षिण की ओर शेष आहुतियाँ फिर अग्नि में डालते हुये पढ़ें:-**आदौ अग्नये स्वाहा इत्युत्तरतः। सोमाय स्वाहा इति दक्षिणतः तयोर्मध्ये मित्राय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा, विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, अनुमत्यै स्वाहा, धान्वन्तरये स्वाहा, वास्तोष्पतये स्वाहा, संकर्षणाय स्वाहा, प्रद्युम्नाय स्वाहा, अनिरुद्धाय स्वाहा, सत्याय स्वाहा, पुरुषाय स्वाहा, अच्युताय माधवाय, लक्ष्मी सहिताय, नारायणाय गोविन्दाय सहस्रनाम्ने विष्णवे स्वाहा। भवाय देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय विनायकाय वल्लभा सहिताय श्री महागणेशाय क्लीं कां कुमाराय सेनाधिपतये कुमाराय, ह्रां ह्रीं सः सूर्याय प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्ये अमायै कामायै चार्वङ्यै टंकधारिण्यै तारायै**

पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै, श्री शारदा भगवत्यै, श्री महाराज्ञी भगवत्यैं, श्री ज्वाला भगवत्यै यमुना भगवत्यै, कालिका भगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महात्रिपुर सुन्द्रयैं सहस्त्रनाम्न्यै देव्यै अभयङ्करी देव्यै क्षेमंकरी भगवत्यै सर्व शत्रुघातिण्यै इहराष्ट्राधिपतये आनन्देश्वरभैरवाय इन्द्रादिभ्य: दशलोक पालेभ्य: आदित्या दिभ्य: नवग्रह देवताभ्य: बह्मध्रुवाभ्यां अनन्ता गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिख्या दिभ्य: पंच चत्वारिंशत् वास्तोष्पति याग देवताभ्य: ब्रह्मयादिभ्यो मातृभ्य: दुर्गा क्षेत्रगणेश देवताभ्य: राकादेवताभ्य: सिनीवाली देवताभ्य: यामी देवताभ्य: रौद्री देवताभ्य: वारुणी देवताभ्य:, बृहस्पति देवताभ्य:, ॐ भूर्देवताभ्य:, ॐ भुवो देवताभ्य:, ॐ स्व र्देवताभ्य:। ॐ भुर्भुव: स्वर्देताभ्य:। अखण्ड ब्रह्माण्डयाग देवताभ्य: धूभ्र्य: उपधूभ्र्य: महागात्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वदुका दिभ्य: उत्पन्नं अमृतं दिव्यं प्राक्क्षीरोदधि मन्थनात्- अन्नम् अमृतरूपेण नैवेद्यं प्रतिग्रह्यताम् किसी कवली में रोटी के चार-पांच टुकड़े रखकर ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नम: पूर्व की ओर अग्रवाले दर्भ धरती पर बिछायें उस पर पश्चिम दक्षिण कोण से

पंक्ति में ऊपर तक पूर्व दक्षिण कोण तक फिर नैर्ऋति से वायु कोण तक तीन-तीन ऐसे ही 36 देवताओं को बलि देना और पढ़ना-

इसी प्रकार दर्भ पर 36 देवताओं को 36 टुकड़े रोटी के बलि के रूप में देना।
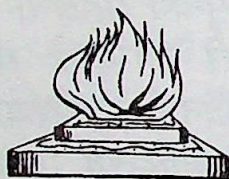
इन पर तिल और पानी से मार्जन करना

तक्षाय नमः, उपतक्षाय नमः, अम्बानामासि नमस्ते, दुलानामासि नमस्ते, नितन्ती नामासि नमस्ते, चुपनीका नामासि नमस्ते, अभ्रयन्ती नामासि नमस्ते, मेघयन्ती नामासि नमस्ते, वर्षयन्ती नामासि नमस्ते, नन्दिनी नमस्ते, सुभगे नमस्ते, सुमङ्गलि नमस्ते, आ भद्रंकरि नमस्ते, श्रियै हिरण्यकेश्यै नमः, वनस्पतिभ्यो नमः, धर्माय नमः, अधर्माय नमः, मृत्यवे नमः, मरुद्भ्यो नमः, वरुणाय नमः, विष्णवे नमः, वैश्रवणायराज्ञे नमः, भूतेभ्यो नमः, इन्द्राय नमः, इन्द्र पुरुषेभ्यो नमः, यमाय नमः, यमपुरुषेभ्यो नमः, सोमाय नमः, सोमपुरुषेभ्यः नमः, वरुणाय नमः, वरुण पुरुषेभ्यो नमः, ब्रह्मणे नमः, ब्रह्मपुरुषेभ्यो नमः, उर्ध्वं आकाशय नमः, स्थण्डिले दिवंचरेभ्यः देवताभ्यो नमः, नक्तञ्चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः।

आचमनीयं, नमः (थोड़ा सा पानी डालिये बायें ओर यज्ञोपवीत करे दक्षिण की ओर अग्रवाला दर्भ बिछाये उस पर तिल और पानी से मार्जन करते हुये पढ़े-*समस्त माता पितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यो भूपृष्ठे दर्भास्तरणे तिलोदकेन अवनेजनं स्वधा।* उस दर्भ को अंगूठे से स्पर्श करते हुये पढें "*उशन्तस्त्वा हवामह उशन्तः समिधी महि। उशन्नुशत आवाह पितृन् हविषे अत्तवे।* तिल, जल, दूध, धूप, अन्न, घी और शहद यह आठ द्रव्य पितरों का अन्न है। यजमान भायाँ घुटना (स्त्री हो) तो बायां लठुर सामने की ओर रखकर पितरों का नाम पढ़कर उन्हें अन्न अर्पित करें और पढ़िये- *देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहा च नित्यमेव भवन्तु इह। तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, आत्मनो वाङ्मनः कायो पार्जितपाप निवार नार्थं पितः एतत्ते अन्नं चेच त्वानु, पितामह, प्रपितामह एतत्तेऽन्नं ये चत्वानु।* इसी तरह *मातः पिता महि-प्रपितामहि। मतामह प्रमाता मह प्रमातामह- वृद्धप्रमातामह, मातामहि, प्रमातमहि वृद्ध प्रमातामहि,* इसी प्रकार तर्पण करें यदि आपको तर्पण करना आता न हो तो भी पढ़िये *मातृपक्ष्यास्तु ये केचित् ये चान्ये*

पितृपक्षजाः गुरुश्वशुर बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः। ये प्रेत भावमापन्ना ये चान्ये श्राद्ध विवर्जिताः अन्नदानेन ते सर्वे लभन्तां तृप्तिम् उतमम्। दायाँ यज्ञोपवीत करके तर्पण कीजिये **हेमनादिभ्यः षड्ऋतुभ्यः नमः।** अग्नि के ईशान कोण पर अन्न की आहुति देकर **"प्राणायाम करना"** अग्नि को तीन बार छिंटे मारते हुये पढें **ऋतंत्वा सत्येन विमुन्चामि सत्यंत्वा ऋतेन विमुञ्चामि, ऋतसत्याभ्यां त्च विमुञ्चामि।** पहले जो चार दर्भ काण्ड अग्नि के चारों ओर फैलाये है, उन को समेट लीजिये और पढें-**यज्ञस्य सन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै नयामि,** अग्निदेव से क्षमा याचना तथा अग्नि की प्रार्थना करें **धर्मं देहि धनं देहि पुत्र पौत्रांश्च देहिमे। आयु रारोग्यं-ऐश्वर्यं देहि मे हव्य वाहनं। भक्तिं देहि श्रियं देहि सुखं देहि स्वतन्त्रताम्। देहि भोगं च मोक्षं च मनोऽभिलषितं मम।। गच्छ-गच्छ सुरश्रेष्ठ ब्रह विष्णु महेश्वराः। यत्र देवालयाः सर्वे तत्र गच्छ हुताशन**-ज्योति को अपने हाथों से अपने ओर जैसे लाते हुये पढेः- **'इत्यात्मानं देहि भगवन् सन्निधत्सु**-गले में लटकता यज्ञोपवीत रखिये और पढिये **हन्त मनुष्येभ्यः सनकादिभ्यः ऋषिभ्यः अन्नं नमः। आचमनीयं नमः।**

श्राद्ध

श्राद्ध की जगह साफ सुथरी बनाकर, श्राद्ध के स्थान पर दक्षिण में एक कुर्सी रखें, उस के ऊपर शुद्ध कोई कपड़ा डाले, जिसका श्राद्ध हो उस का फोटू फूलों से सजा कर उत्तर की ओर मुँह करके रखिये। इसी फोटू के सामने रत्नदीप धूप जला के रखें-पहले इस फोटू को केसर या चन्दन का तिलक लगायें और नमस्कार करते हुये पढें-*शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं-सुरेशं विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्ण शुभांगम् लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्वलोकैक नाथम्। देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद, प्रसीद मार्तजगतो खिलस्य, प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वम्-त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।* अर्घ और फूल चढायें, साष्टांग प्रणाम करते हुये पढ़िये-*उभाभ्यां जानुभ्यां शिरसाचोरसा वचसा मनसा नमस्कारं करोमि नमः,* आचमनीय के रूप में थोड़ा सा जल डालिये कवली में नैवेद्य थोड़ा सा नाबद किशमिश आदि रखिये-फिर से पढें *ओं नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।* दायाँ यज्ञोपवीत करके स्वयं आचमन करके बायें यज्ञोपवीत करके अब श्राद्ध आरम्भ करें। फोटू के सामने चोरस लिपाई करें-कुरुत (क्रिया करने वाला) फोटू की ओर अर्थात्

दक्षिण की ओर मुँह करके बैठे-चावल के आटे से चोरस एक लकीर डाले बतबहुगुण अपने पास लाकर अन्नपूर्णा के रूप में बतबुहगुण को प्रणाम कीजिये-बहुगुण को तिलक अर्घ पुष्प लगाये पढ़िये ***समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः, पुष्पं नमः*** बहुगुण में से कुछ बात जो एक व्यक्ति के लिये काफी हो थाली में एक तरफ संभाल के रखें-थाली को लिपाई की हुई जगह पर एक लकीर के बीच में रखें- इस थाली में कवलियों में सब्जी सुसजित रूप में रखें क्योंकि यह अन्न आप ने प्रेत (प्रेत से मतलब है) प्रकर्षेण हतः जो पूरी तरह से जुदा हो गया है उस को खिलाना है। इसलिये इस थाली को श्रद्धा से संभाले यह सभी कार्य आप दायें यज्ञोपवीत से करें, अब थाल से तीन म्यचियाँ निकाले और थाली के दायें तरफ लकीरों से बाहर रखिये और पढ़िये:- ***ॐ भूत पतये नमः, ॐ भुवन पतये नमः, ॐ भूतानां पतये नमः*** अब क्रिया करने वाले कुरुत को चाहिये यह थाली दोनों हाथों से श्रद्धा से उठा कर पितृ को अर्पण करते हुये पढे- (दायाँ यज्ञोपवीत) **पुरुषमेधाः पुरुषस्य नारायणस्यार्षम्।**

सहस्रशीर्षा, पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात्।
सभूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठत् दशाङ्गुलम् ।1।

पुरुष एवेदं सर्वं यत् भूतं यत् च भव्यम्।
उत्तामृत त्वस्ये शानो, यत् अन्नेनाति रोहति।2।
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च, पूरुषः।
पादोस्य, विश्वा भूतानि त्रिपाद् अस्यामृतंदिवि।3।
त्रिपात् ऊर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः।
ततो विश्वं विक्रामत् साशना नशने अभि।4।
तस्मात् विराडजायत विराजो अधिपूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत, पश्चात् भूमिम्-अथोपुरः।5।
यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञम्-अतन्वत।
वसन्तो अस्यासीत्-आज्यं ग्रीष्म इध्मः शरत् हविः।6।
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातम्-अग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।7।
तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषत् आज्यम्।
पशूं तांश्चक्रे वायव्यान् आरण्यान् ग्राम्यांश्चये।8।
तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दासि जज्ञिरे तस्मात् यजु तस्मात् अजायत।9।
तस्मात्-अश्वा- अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः।10।
यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्यते।11।
ब्रह्मणोस्य मुखं-आसीत्-बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यत वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।12।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखात् इन्द्रश्चाग्निश्च प्राणात् वायुः अजायत।13। नाभ्या आसीत् अन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमि र्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान्-अकल्पयन्।14। सप्तास्या सन् परिधयः त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यत् यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्।15। यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन् ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्ति देवाः।16। भोजन की थाली फिर अपनी जगह रेखा के अन्दर रखिये बायां यज्ञोपवीत रखे अब आचमनीय के निमित फोटू के सामने थोड़ा सा जल डालते हुये पढें ***पित्रे*** अथवा ***मात्रे* '*ब्रह्मार्पणं ब्रह्महवि र्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्-ब्रह्मैव ब्रह्मगन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिना।*** अब लकीरों से बाहिर दूसरी थाली में भी तिल, दूध, शहद बता के साथ मिलाकर लगभग एक-एक पाव के 4 पिंड बनायें हर पिंड का ऊपर का भाग थोड़ा सा लम्बा बनाये। अब अग्नि के सामने लेपन करके दक्षिण की ओर अग्रवाले दर्भ के तिनके बिछा के पढें ***पित्रे*** अथवा ***मात्रे सांवत्सरके श्राद्धे भूपृष्टे दर्भास्तरणे तिलोदकेन अवने जनं स्वधा*** दर्भ को छींटे मारिये-अब पहले पिंड को दायें हाथ पर रखकर फिर बायां हाथ उस पिंड पर

रखकर ऐसे ही चारों पिंड दर्भ पर उत्तर से दायें के ओर रखते हुये पढें ***अद्यतावत् तिथौ अद्य मासे पक्षे वासरे पितुः (मातु) सांवत्सरिके श्राद्धे एष ते पिण्डः*** दर्भ पर रखे पिण्ड के ऊपर थोड़ा सा जल डालिये और पढ़िये- ***आपः उपस्पृश्य*** इसी भांति पहले पिण्ड के साथ दूसरा पिण्ड, तीसरा पिण्ड रखते जाये साथ-साथ पढ़ते जायें ***पिता महाय, प्रपिता महाय एषते पिण्डः आपः उपस्पृश्य।*** ऐसे ही चौथा पिण्ड मूल पुरुष पिण्ड उठाकर पढ़िये ***अद्यतात् तिथौ अद्य, मासे पक्षे, वासरे*** यह पिण्ड तीन पिण्डों के सामने रखें। ***मूल पुरुषाः भूमिस्वामिनः पितरः एष वः पिण्डः स्वधा*** सब पिण्डों पर बात की छोटी टापियों (जिन को वीरान्न कहते है रखें-यह वीरान्न रखते हुये पढ़े-***वीरान्नो पितरो दत्त पण्डिलेपं निवारयेत्*** हाथ साफ करें-अब पिण्डों को अंगूठे से नीचे के ओर तिलक लगाते हुये पढ़े- ***पित्रे (मात्रे) पितामहाय, प्रपितामहाय समालभनं गन्धः स्वधा, अर्घः स्वधा, पुष्पं स्वधा।*** अब किसी कवली में भक्ष्यभोज्य फलमूल रखकर पढ़िये ***सांमक्त्सरिके श्राद्धे पित्रे पितमहाय प्रपितामहाय अन्नं स्वधा पित्रे पितामहाय हिमपानं स्वधा क्षीरपानं स्वधा उदक तर्पणं स्वधा*** पानी से तर्पण

कीजिये। दायाँ यज्ञोपवीत रखकर यजमान आचमन करे- किसी कटोरी में थोड़ा सा पानी डालकर किसी देवी के हाथ में देकर द्वार को छींटे मारिये जिस को सन्य कहते हैं। अब किसी पात्र में प्रेप्युन लाइये, **सावित्राणि सावित्रस्य पितृगण संतोषनार्थं ओं नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः** बायाँ यज्ञोपवीत रखकर **पित्रे सांकत्सरिके श्राद्धे आचमनीयं स्वधा,** दायें कन्धे के ऊपर से पिंडों पर दृष्टि डाले। दक्षिणा के रूप में जो जो वस्त्र, पात्र इत्यादि माता-पिता के निमित देना हो थाली में रखें और पढ़ेः- **तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत्, तिथौ अद्य, अमुक वासरे, अमुक पक्षे पितृ परलोक शान्त्यर्थं दक्षिणां सान्नं, सभाण्डं सवस्त्रं, संकल्पयामि।** फिर कलश पर फूल चढाते हुये पढें **कलशयाग देवताभ्यः दक्षिणायै तिलहिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि, आकाश मातृभ्यः समाल भनं, अर्घो नमः, पुष्पं नमः।**

अब अन्नकणों के सामने पृथ्वी पर अन्न डालते हुये पढेंः- **सौरभेयाः स्वर्गहिताः पवित्राः पुण्य राशयः। प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावः त्रैलोक्यमातरः "गोभ्योऽन्नं नमः।** बायाँ यज्ञोपवीत रखकर पढें **रौरवाधीन सत्वानां प्रेतद्वार निवासिनाम्। अर्थिनां याचमानानां अक्षयमुपतिष्ठतु।**

दक्षिण हाथ में दर्भ के दो काण्ड रखें और तीन बार

गायत्री मन्त्र पढ़ कर पिता, पितामह, प्रपितामह के नाम लेकर **कलश पूजने, क्षेत्रेश्वर पूजनं अछिद्रं सम्पूर्णं अस्तु एवं अस्तु।** फिर कलश को फूल डालते हुये पढेः– **आपनोस्मि शरण्योस्मि सर्वावस्थासु सर्वदा, भगवन् त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्- आवाहनम् न जानामि, नैव जानामि पूजनं, विसर्जनं न जानामि क्षम्यता परमेश्वर, उभाभ्यां जानुभ्यां, पाणिभ्यां शिरसा, चोरसा, मनसा, च वचसा, नमस्कारं करोमि नमः।** बायां यज्ञोपवीत रखकर 'पात्र चाल' बाहर कहीं वृक्षादि के पास छोडिये और 'पात्र चाल' की जगह को लेपन करके शुद्ध कीजिये फिर दायां यज्ञोपवीत रखकर आचमन क़रें। उसके बाद कलश लव दीजिये और पढेंः-**मन्त्रार्थाः सफला सन्तु पूर्णा सन्तु. मनोरथा शत्रूणां बुद्धिनाशस्तु, मित्राणामुदयस्तव-आयुर्-आरोग्यम्- ऐश्वर्यं, एतत त्रितयं अस्तु मे-** दीपक बुझाये अब पिण्ड नदी में डाले, नदी न होने पर ऐसी जगह डालें जहां पशु-पक्षी खा सकें।

इति शुभम्

हमारे प्रकाशन

(1) **कर्म काण्डदीपक** (हिन्दी तथा उर्दू में) (जिस में धूप-दीप विष्णु पूजन, प्रेप्युन, शिव पूजा, दिवचखीर पूजा, यक्षामावसी पूजा, जन्म दिन पूजा, बुनियाद मकान पूजा, गृह प्रवेश पूजा, दीपमाला पूजा, श्राद्ध संकल्प विधि, रुद्र-मंत्र, चमानु वाक्य, पन्न कथा तथा पन्न पूजा, शिवरात्रि पूजा, शिवमहिम्नस्तोत्र)।

(2) ***पंचस्तवी*** (हिन्दी तथा उर्दू में) अर्थ तथा व्याख्या सहित)।

(3) ***भवानी सहस्रनाम***, महिम्नस्तोत्र, बहुरूप गर्भ, इन्द्राक्षी (उर्दू तथा हिन्दी में)

(4) ***शिवरात्रि पूजा*** (हिन्दी तथा उर्दू में)

(5) ***सन्ध्या*** (हिन्दी तथा उर्दू में)

(6) ***स्वाहाकार*** (पुष्पाचर्न) शिव, विष्णु, गणेश, सूर्य, भवानी शारिका, ज्वाला, महाराज्ञी।

(7) ***राम गीता*** (हिन्दी तथा उर्दू में)

(8) ***श्रीमत् भगवत् गीता*** (उर्दू में)

(9) ***शारदा प्राईमर।***

(10) ***अन्तिम संस्कार विधि*** (हिन्दी तथा उर्दू में)

(11) ***श्राद्ध विधि***

(12) ***दसवां, ग्यारहवां, बाहरवां दिन***

(13) ***नवग्रह पूजा विधि***

विजयेश्वर प्रकाशन

स्व. प्रेम नाथ शस्त्री द्वारा

विजयेश्वर पंचांग कार्यालय

अजीत कालोनी

Ph. : 555607